

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अध्यायविंशतिराहणविधानं लिख्यते ॥ ॥ मासानियमायथा ॥ आवा
 रुणकयकुरु मिथूनस्तु दिवाकृतं । अश्विमास्यवतुर्दशैकैर्द्वयं सुयविरक्तं ॥ गत्यमादास्तु क
 र्त्तव्यं कर्त्तुं शुद्धिदिवाकृतं । अवित्राधनकर्त्तव्यं यावच्चतुर्थ्ययुष्मिमा ॥ उत्तमायादिर्गन्था क
 मध्यमास्तु मग्नवत् ॥ अधमास्तु मरादवत्रागविहृतिवाग्धिनः । कार्तिकेयवर्द्धवा नीशि
 वत्रागसूक्ष्मिक ॥ ॥ अत्रयकात्र ॥ आवा रुणवत् ॥ वैवर्द्धव्यं रादमासिक । कार्तिक
 दवयवर्द्धवत्तु मध्यमकन्यकं । शोवर्द्धवा रुर्गन्तामं कर्त्तव्यं संवत्सु गकमा ॥ कार्तिकेय
 रुकन्या रिमिगुणं विगुणीकृतं ॥ यत्तुवत्तुमावर्द्धवत्तु नानागुहात्रविशसादाकास

चैव वायु कभण नवगनुय ॥ मूलन समूहं कात्रथ ॥ ॥ रुवद विधि (थं) यूटिः
 कामालका कायधूनक ॥ रुक्मकृद्वदवमगडा वियोवगा (थ) ॥ ॥ सुगिका द्रुय ऊ
 मानथाहिग आदिन द्रुन कर्म मानादिशु विवमु नित्य कर्मधूनक ॥ सूर्यार्थ या दार्थ याः
 यमालसा ॥ वाक नन गुत्र नमस्कात्रवा सार्थ याग यूजा ॥ वलिविय याग ३ गण वदु
 गुरुकादि ॥ अग्निगामादि ॥ वक्राध्यादि ॥ नवात्मा ॥ वद ॥ ॐ गणानां ॥ ॐ नभावतुभय
 ॥ ॐ नृवं नृमिक ॥ ॐ हयगथसाहा ॥ ॐ द्युर्नयुग ॥ ॐ विश्वग ॥ ॐ याशेदि (ग) साहा ॥ ध्रुय
 द्ययजायमान ॥ ॐ निर्वाणनिर्वि ॥ नृभुनविसर्जन ॥ गायतुसुधाय ॥ धनलिय ॥ गय
 ४॥ वाक्म (स) ॥ ॐ भूयादि ॥ यउमानस्यशी ३ री मनान ॥ धनरुमानकाय पूर्वसकलेपी पविशानाहनयनूकर्म

साधनयायनेमलस ॥ वाक नन ॥ ॐ नृयादि ॥ यउमानस्यशी मगशी ३ री मनान ॥ धनरु
 द्योत्रकाय पूर्वसकलित यविगात्राहनयनूकर्म ॥ य ॥ गय सोधननिमित्तार्थ ॥ वाक्म
 सूर्यार्थ गुत्र नमस्कात्र मूलन कत्राऊ सास ॥ नृर्थयाग यूजन ॥ गग ४ यय गय यूजन ॥
 नृत्वकृण ॥ ॐ रुवस्यला ॥ पूर्वदधि ॥ ॐ कां गत्युवाय २ ॥ ॐ दधिकाया ॥ दकि (ए) द्युर्न ॥ ॐ
 कां नृथानाय २ ॥ ॐ गजासि ॥ यश्विभ (म) मय ॥ ॐ कां सधाजा गाय २ ॥ ॐ गंधदात्रा ॥ उरु
 (म) मूल ॥ ॐ कां वामुदवाय २ ॥ ॐ गयरी ॥ मध्य गामयाय कीर्त ॥ ॐ कां लीगानाय २ ॥ ॐ
 यय ४ यथिया ॥ नृ (म) मयलिंग यूजन ॥ नृथानमूलमनु ॥ ॐ नम ४ गीरवायव
 ॥ सर्वगयया ३ य ॥ पूर्वव ७ मनु (म) मयादि मध्य निधाय ॥ नृथान ॥ मिश्रय ७

निमीयर्थवाक्यः

ॐ समया मिसमाय उषधी रिः सुभाषधथात्रभुन । स ० त्रवगितीर्क गगि रियुयं गा ० सु
मधुमगीर्मधुमगिरि रियुयं गा ॥ ॐ वृद्ध ० ॥ वल्गनादियुऊन ॥ स्मृ ॥ ॐ निर्मल कायद्रु
यायवक्रकानननिवर्कन । शुद्धनयाययुं सानां विनिर्गवक्रद्रुयिर्ण ॥ विरागं दवाग्नि
यऊमानराह ॥ ॥ गमयलिगर्धन ॥ स्नानयदन सिद्धनयकायवीगयुयधुयदीय
॥ वृद्ध ॥ ॐ गिवांनामासि ॥ स्मृ ॥ ॐ गमयलिगर्धनयाय सर्वयाययुणागिन । पूर्वदह
यविशायगलद्रुयायगनमः ॥ ॥ यऊमानं गयं शुगवविय ॥ ॐ वाचकृष्टं धमि
॥ यागनं ॥ ॐ त्वमेवद्रु रिः ॥ सिवनं ॥ स्नानयद्रुका मधुयसंस्नानमालसा ॥ विद्रुकाया
य ॥ वृद्ध वीहि । गवा । वृद्धलरायकं गयावद्रुकायाय ॥ ॐ कांशिकायगिवाकुमूकं थ

या ३

नमः ॥ ॐ वीहययभ ॥ दद्रुवीहि ॥ ॐ कांयुष्टिकायविद्रुमूकं थ नमः ॥ ॐ वृद्धविद्रु ॥ वाम
नाका ॥ मधुसंमार्कनी ॥ ॐ कांसुर्वत्रिद्रुविनागायवक्रकाननमूकं थ नमः ॥ ॐ वृद्धयकानन
॥ वीहिद्रुयनं ॥ ॐ वीहययभ ॥ लाजाद्रुयनं ॥ ॐ सुस्तिनवृद्धा ॥ वामहस्तनार्थयार्थगिर्व
गृहीत्वा दक्षिणकनरुसमार्कन्यासं मार्कनं दक्षिणावर्धनमूलकलगाययर्थनं गच्छ ॥
ॐ वायुवायाहिवीगथयुगा नाहवकागथ । यत्रिणात्रुदसुधामसु ॥ कलगासनायुकल
य ॥ वृद्धगनद्रुऊनं । गमयलिगस्तिनासनद्रुऊनं ॥ ॐ नमः ॥ गंरावायव ॥ ॥
यऊमाननयुयराऊनसमर्थनं ॥ ॥ वाक्रकाननकलगावर्धनं ॥ ॐ वृद्धादि ॥ ॐ वाक्रक
॥ युयनं ॥ शुत्रनमस्नानन्यासाय यावद्रुका शालद्रुका ॥ गगः कलगावर्धनं ॥ ॥

अद्वैतानं

ॐ गन्तव्यामि ॥ ॐ द्रवस्यत्वा ॥ ॐ लम्बमे ॥ ॐ आयात्रसां ॥ ॐ यस्यकूर्मा ॥ ॐ स्थानायधि ॥ ॐ
यनयं ॥ ॐ अमिन्दे ॥ ॐ दात्राद्वी ॥ ॐ यत्नातिष्ठग ॥ ॐ ईयन ॥ ॐ ल्दविष्णु ॥ ॐ अग्नि
मीठ ॥ ॐ ल्षस्त्रा ॥ ॐ अन्नआया ॥ ॐ जन्नाद्वी ॥ ॐ उयद्रन ॥ ॐ नदीत्व ॥ ॐ गणनीत्वा ॥
ॐ बृहस्पत ॥ ॐ यावकान ॥ ॐ शीघ्रत ॥ ॐ अस्माकमिन्द ॥ ॐ नभावतूभय ॥ ॐ अर्शोय
लाभा ॥ ॥ निदात्रार्चनं ॥ ॐ आधात्रादिः ॥ ॐ द्रवस्यत्वा ॥ ॐ ल्मंभ ॥ ॐ जितासिः
न ॥ ॐ र्यचनश्च ॥ ॐ अक्षिद्य ॥ ॐ उयद्रन ॥ ॐ सुकप्पयय ॥ ॐ वृत्तल्ला ॥ ॐ वक्रयक्षा
न ॥ ॐ नमः ॥ ॐ गीतवाय ॥ ॐ गुप्तकं ॥ ॐ शीघ्रत ॥ ॐ हिनध्यगर्क ॥ ॐ बृहस्पत ॥ ॐ निकल
मर्चनं ॥ ॥ उगात्रामिन्द १० दशल्लोकपालं ॥ ॐ अक्षुक्तिनवग्रह १० ॥ ॐ गणनीः

[illegible]

उलंभासंदं काय ॥ निर्मलनादि अग्निना हलकासुगुणगीवोदं ॥ लंखधनधसंदं काया
ववाकृणलवकाय ॥ ॥ गगनवाकृणनयविगुणधनं ॥ गगामूलनकनाज्यासं
कला ॥ मूलगुहणं ॥ अमुनसुमहं काय ॥ दृढयमकुनकुलनयकाय ॥ नग
मकुणधनं ॥ निरामकुणसुगुवद्वणं ॥ गिरसिमकुणयकिर्णं ॥ कवयनगंधनल
यय ॥ मूलनयवगवनालुद्वणं ॥ ॥ यूनदृढयादिमकुणयुज्जनं ॥ मूलनकुय
॥ धन १०८ ॥ गायत्री ॥ ॐ ह्रीं भवताय विद्महे वक्रदं हाय धीमहि । गन ४३३३
थादया ॥ धन १० ॥ ॥ धनलिकलगायाद्वनगयावगिरलनधनयाय ॥
आकृगिविय ॥ ॐ कां आत्मगलाय साहा ॥ वद ॥ ॐ वक्रयज्ञानं ॥ सयलवधुवानलाय ॥

ॐ कां विद्या गलाय साहा ॥ वद ॥ ॐ वक्रविष्णु ॥ लाय ॥ ॐ वक्रगिरगलाय साहा ॥ वद ॥ ॐ न
म ४३३३ वायय ॥ लाय ॥ ॐ गिरगलधनं ॥ ॥ मूलनआकृगिविय धन २१ ॥ व
द ॥ ॐ नम ४३३३ गवय ॥ सयलवधुवनयु ॥ ॥ धनयविगुदवक्रदं कायाव
आयार्थनयविगुकायावआमकुनयविगुकायावमूलनकुय ॥ गायत्री ॥ ॥
गगावार्क ॥ ॐ अद्यवालाहकल्यणि ॥ ॐ अद्यादि ॥ ॐ कानात्मनालयाद्वयदृष्टमामक
विष्णु । कर्णकिष्णसुमल्लुद्वं युक्तं यमलुगं । गदमुक्किष्णमकिष्णकनयुष्टं सुमस
लुगं । सुवर्त्मनामनाद्वयविगुणलदिद्वया । समस्तविधिविद्विर्दयुनणाययवि
गुक्तं । गतिद्विमनुजानीहियुक्तं यविगुक्तं । सर्वथासर्वदार्शनमस्तुयसी

दम। अमन्त्रिता सिद्धवशा सहदया गणेश्वर। मन्त्रलोकया लेख्यसहित ४ यनिवाल
कै॥ निवदयामहं तु त्वं यता न प्रयविगकं। नियमश्च कनिष्ठा मियत्र भगवत्कृपा॥
अयगी॥ मूलन अमन्त्रन यविगकन यायू॥ ॥ स्वसमन्त्र॥ यधिलिखन्त्रकून
हीमन्त्रकल सहदय कीकी डीयदी दव दवी इ॥ अमन्त्रन थगर्लकाय॥ ॥
थनलिहामयाथयस् कलगादि अग्नि कृष्ण सकल लुंकाय॥ ॥ यून ईहा वंदावद
वस्त्रगंधयविगकाय॥ ॐ अथवाला रुकल्यनि॥ ॐ अथादि॥ ॐ कानामनलादि॥ अय
गी॥ ॐ अथानाथयविगह स्वकृन्दायधीमहि। गन ४ त्रुद ४ यथा दया ७॥ दयाया कथनं
काय॥ ॥ ॐ अथात्रायविगह अत्रात्रयायधीमहि। गनात्रुद ४ यथा दया ७॥ ॐ कां

हीमन्त्रायविगह वक्रुदहायधीमहि। गनात्रुद ४ यथा दया ७॥ ॐ कां अमथामायः
विगह सुकृ सुकायधीमहि। गन ४ गण्यथा दया ७॥ ॐ गन हगयविगह वाग्विगुका
यधीमहि। गन ४ गिव ४ यथा दया ७॥ ॐ गिगयगी॥ ॥ ॐ कूं मूल गिव गल यविग
कन यायू॥ ॐ कां मूल विद्या गल यविगकन यायू॥ ॐ कां मूल अम गल यविगकन या
यू॥ ॥ गं गवतात्र॥ नवात्मा मूल विद्या॥ वती गीगयन वात्मा मन्त्र १ गं गवतात्रय
विगकन यायू॥ मूल यविग हीममनस्य मूल मन्त्र अथात्र मूल माला मन्त्र १ मूल गं
धयविगकन यायू॥ अर्चनं यून ॥ वलिय॥ गदामुद्रा॥ ॥ यधिलिखादि क
वयागयगी कथनं काय॥ मूल॥ ॐ कां यधिलिखन्त्रकूं यगंधयविगकन यायू॥ ॥

ॐ कौं नृकन ॥ ॐ कौं रीम ॥ ॐ कौं नकल ॥ ॐ कौं सहदव ॥ षष्ठंगयनि ॥ बलिव ॥ ॐ
कौं सहकानी मूर्कथ गंधय विरकन यायू ॥ षष्ठंगवलि ॥ ॥ दायदीस ॥ गायत्री ॥ ॐ
दां दीं दू द्वां धी दायदी मूर्कथ गंधय विरकन यायू ॥ षष्ठंगवलि ॥ थानि मूडा ॥ ॥
दवस ॥ गायत्री ॥ मूल ॥ षष्ठंगवलि ॥ विमल मूडा ॥ ॥ दवीस ॥ गायत्री ॥ मूल ॥
षष्ठंगवलि ॥ थानि मूडा ॥ ॥ इ० गसुन ॥ गायत्री ॥ ॐ द्वां इ० गसुन मूर्कथ गंधय
विरकन यायू ॥ षष्ठंगवलि ॥ धनू मूडा ॥ ॥ धनयि दू वन नृमिकल गदि र्मुं स
समनु र्काय ॥ थं थं थं काथं थं उगलु गिकारलजी रुनेम विष्यक मां या र्गं काय
॥ गंगा दवी र्चन कभ र्ण रुनि ॥ ध्वन सर्वान सृ (ग०) ॥ आरुति ३ ॥ ॐ मना रुनि ॥ लाटाव

टवानयनिष्ठायाय ॥ ॥ धनलि वलिभाल ॥ समयादिमहावल्यानं धूनक ॥ धूपदीप
 जायकाय ॥ यशुनर्थ ॥ वाकनकायक ॥ ॥ यथागकिर्गुणानि राजा दण्डयुक्तं
 नायार्थं दण्डयाति ॥ ज्ञानिकं योष्टिकं । यवधन्यादि । वलियुक्तं । वृत्तिकाहर्म्याय
 श्विरुहर्मं । यथागकि । वलिहर्तु ॥ वाक्ययुक्तं । ब्रह्मियहर्तु । दण्डवाक्य ॥ लब्धकि
 णदानं ॥ वाचनकाय ॥ शंसवयागनं ॥ द्यूष्ट्याय दक्षिणादानं ॥ नग ४ संयुक्तं ॥ ॐ य
 उमानस्य शीमन्तु ३ शीमन्तु नश्यन्तु य द्यूष्ट्यं संकल्पितं यविगात्राहनयस्तु कर्म संयु
 क्तं निमित्तं य द्यूष्ट्यं कृतिस्तु कर्म ममु ॥ वाक्य ॥ ॐ दवागत्र ॥ द्वा संसा ॥ य उमानेन

मधुलंकलाकारं अंगुगंधादिमधुलसूयस्य ह्यर्थं ॥ अथाद्याहं विसर्जनं ॥ दवाग्नि-
लगागीर्वाहं ॥ वक्रायणीत विसर्जनं ॥ आयुषीकत्रणं ॥ कलगादिविसर्जनं ॥ कल्लारु-
प्रसक्तिकायनियुक्तमाननिर्मोक्तनं वलि ॥ कलगाजलनातिषकवन्दनसिद्धनदवया-
करुयाभाहनीसुगुणयुयारुलागीर्वाहं दद्यात् ॥ दय्येणवलाकनं ॥ यत्नविसर्जनं ॥ सु-
यसादि ॥ दूदयनासलीनं ॥ वलिर्गुजावनगमयससूयादिक्वाय ॥ आचार्येन कोमात्री-
यागंकला ॥ कोमात्रीविसर्जनं ॥ समयशास्त्रकर्तृकानं ॥ ॥ यूनः चतुर्थदिवस आ-
चार्येन युज्जनं ॥ ॥ तृतीयातीमस्य यविगात्राहनविधिः समाप्तः ॥ - ॥
सं ११२ अथारमास लिखितं शाश्वतं ॥ यथादृश्यं तथा लिखितं ॥ ॥

१३
श्रीमस्यविगुक्ताययात्वायथग ॥ १०२ १०१ गंधि १० गिवगत्वर्थं ॥ धृक् १० अंगुलि ३ ॥
१०१ ५४ गंधि १२ धृक् १० अं २ विद्यागत्वर्थं ॥ १०१ ५४ गंधि १० अं २ गत्वधृक् १०
अं ४ कथ ॥ १०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५ धृक् १० अं ५ गंगवगात्र ॥ १०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५
धृक् १० अं ८ मूलयविग ॥ १०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५ धृक् १० अं ५ यदीस ॥ १०१ ५४ गं-
धि ५ वंकि ५ धृक् १० अं १ यधिस्त्रि ॥ १०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५ धृक् १० अं १ श्रीमस ॥
१०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५ धृक् १० अं १ अर्जन ॥ १०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५ धृक् १० अं १ न-
कल ॥ १०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५ धृक् १० अं १ सरुदव ॥ १०१ ५४ गंधि ३२ धृक् १० अं १ को-
नीदवीया ॥ १०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५ अं ४ सोसन धृक् १० ॥ १०१ ५४ गंधि ५ वंकि ५ अं ४

या धृक् १४ ॥ तुं १०८ गंथि ३८ धृक् १४ दवी या ॥ तुं २१ गंथि ३ वंकि ३ अंयुलि १६ धृक् अंमि
 कृष्टया ॥ तुं २१ गंथि ५ वंकि ५ धृक् १ कलणया ॥ तुं २१ गंथि १६ धृक् १ कृष्टसुष्ट ॥
 तुं १ गंथि १ ग्यतुजा ॥ तुं ८ गंथि ८ कृष्टया ल ॥ तुं १२ गंथि १२ (ग)ग्रस ॥ तुं १ गंथि
 १ (म)मयलिङ्ग ॥ तुं २ गंथि २ कोमात्री ॥ तुं २१ गंथि समग्रवा ॥ तुं २१ गंथि समसद्रु
 ति ॥ तुं २१ गंथि समर्थथक् काथक् उगल गिकातलजीः हलमथगयाउगिठ ॥
 तुं २१ गंथि कर्वं क विष्यकमा ॥ तुं १४ गंथि कर्वं क यूजा वात्रीयनिरु ॥ तुं १४ गंथि कर्वं क
 यऊमानयनिरु ॥ ॥ थगरीमयायुठिकाकायविधि ४ कृत्रा ॥ ॥
 समं १०८ २ समं १०८ २ समं १०८ २ समं १०८ २ समं १०८ २ ॥

१॥ नानायाय ॥ य
 २॥ वि ४४५ ॥ य
 ३॥ सि ४४५ ॥ य
 ४॥ का ४४५ ॥ य
 ५॥ जा ४४५ ॥ य

११२ भीमपविचारोद्देश्य यक्षकर्मविधि भीमस्य पवित्रलयायपाल्याख्य

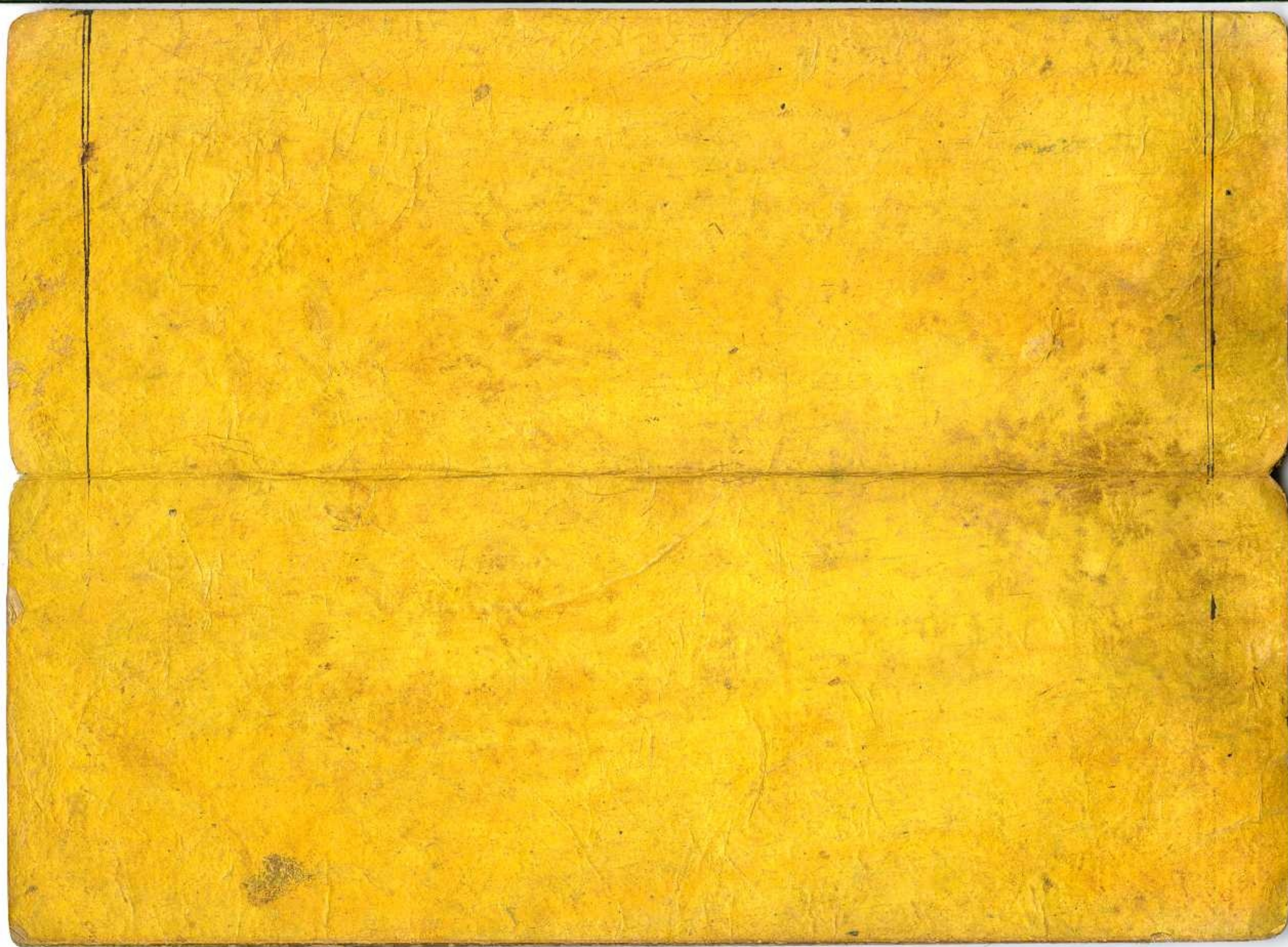
ASHA ARCHIVES 3470

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ कौण्डिन्दी श्री मती मा ली क र्व ग य ठ आं रु द या य न मः ॥ १०० श्री मती मा ली चं
 ॐ जि न म स्म रा ॥ १०१ श्री मती मा ली टं रु डं जि न य र्व य ट ॥ १०२ श्री मती मा ली गं रु नं क व रा य ट ॥ १०३
 श्री मती मा ली यं रु डं न ग र्व या य व य ट ॥ १०४ श्री मती मा ली यं १०४ रु म्मा य रु ट ॥ १०५ श्री म
 ती मा ली कं रु आं म धी मा ली न मः ॥ १०६ श्री मती मा ली चं १०६ रु ना मि का ली स्म रा ॥ १०७ श्री मती
 मा ली टं रु डं क नि स्म ली व य ट ॥ १०८ श्री मती मा ली गं रु नं ग रु नी ली ट ॥ १०९ श्री मती मा ली यं रु
 डं यो य ट ॥ ११० श्री मती मा ली यं १०४ रु न ग ल रु म्मा ली रु ट ॥ ॥ १११ श्री मती मा ली न म
 ॥ ल ला ट ॥ ११२ श्री य ष्ठ व सू ग म का ली न मः ॥ ११३ १ व ल र हि ति मा ली न मः ॥ ११४ रु न ग ॥
 ११५ १ म हा व ल व लि नी ली न मः ॥ ११६ व म न ग ॥ ११७ १ म व र्ण रु म्मा ली न मः ॥ ११८ रु क रु ॥

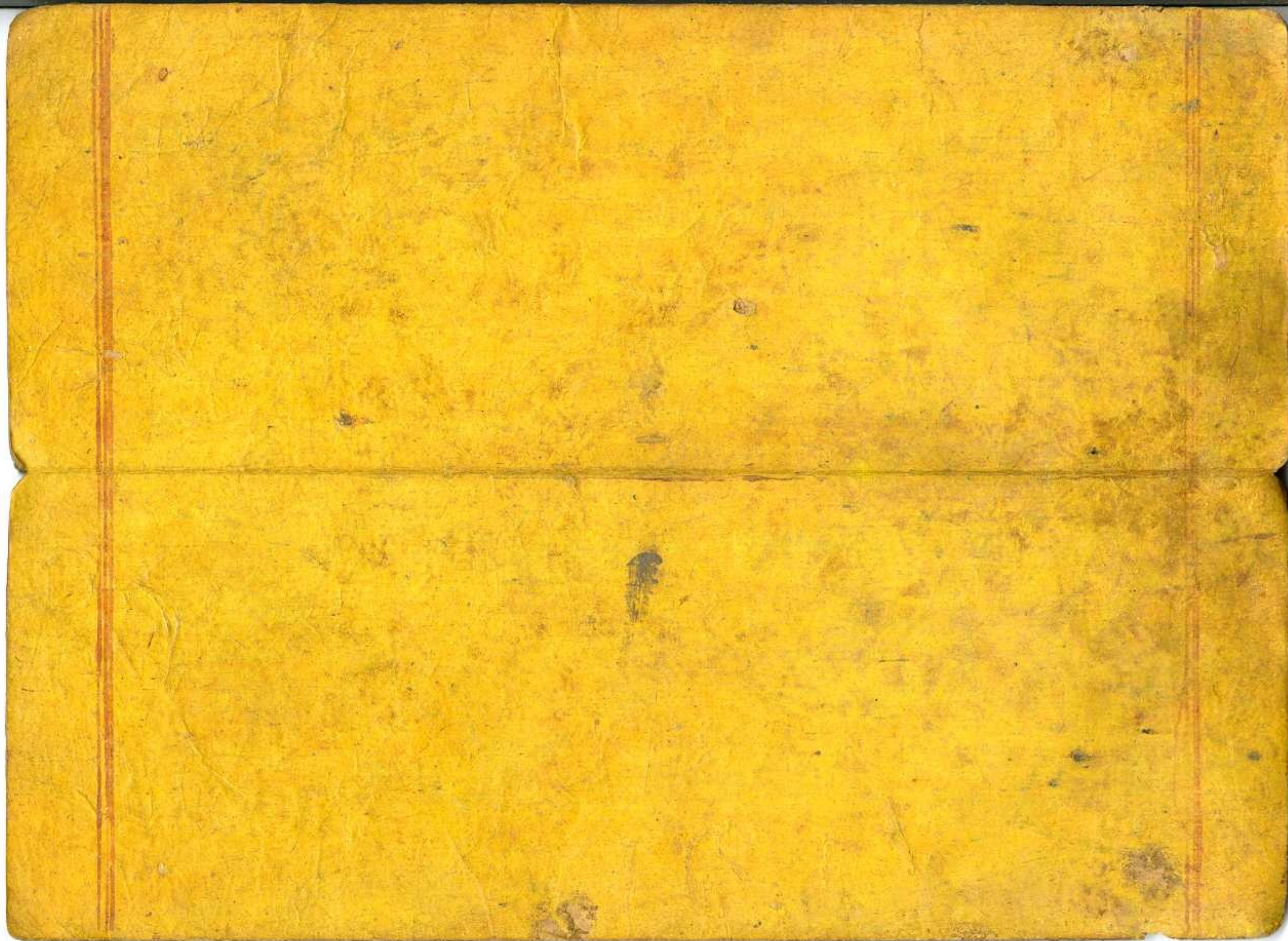
त्रिया०३

[illegible]

मूल।









॥ १५ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

[illegible][illegible]

॥ शुभः
 ॥ ५६८
 ॥ ६७५८
 ॥ ७८६५८
 ॥ ८७५८
 ॥ ९८७५८
 ॥ १०८७५८
 ॥ ११८७५८

[illegible]

11 4471
 11 4472
 11 4473
 11 4474
 11 4475
 11 4476
 11 4477
 11 4478

[illegible]